Date: / /

Understanding Discipline and Subjects

⇒ अनुशासन एवं विषयों की समझ

Meaning of Discipline अनुशासन का अर्थ

Discipline अंग्रेजी भाषा का शब्द है।
जो लैटिन भाषा के Disciplus (डिसाईपुलस) से लिया गया है। जिसका अर्थ है सीखना
आधुनिक युग मे Discipline का अर्थ है व्यवहारो मे निश्चितता है (नियम बद्धता)
जो आत्म नियन्त्रण एवं प्रशिक्षण से आती है
एवं
अनुशासन संस्कृत भाषा का शब्द है।
शासन शब्द के साथ अनु उपसर्ग लगाकर इस शब्द की रचना हुई है।
शासन शब्द शास् धातु से बना है।
शास् का अर्थ होता है। स्वेच्छा पूर्वक नियमो तथा नियन्त्रण को स्वीकार करना इसे आत्म संयम भी कहा गया है।
हम इसे विनय शब्द से जानते है।

⇒ भारतीय विचारको ने इसे अन्तर से माना है।
⇒ पाश्चात्य विचारको ने इसे बाह्य से माना है।

संस्कृत में श्लोक है

"विद्या ददाति विनयम"

जॉन डीवी के अनुसार →

"अनुशासन विद्यालय की सामाजिक स्थितियों में निहित है यह विद्यालय को समाज का एक छोटा स्वरूप मानता है जहाँ छात्र/छात्राएँ विद्यालय रूपी समाज के सदस्य के रूप में कार्य करते हैं जिससे वे कालान्तर में सामाजिक जीवन के साथ समायोजन स्थापित कर सकें।"

रूसो तथा स्पेन्सर →

"अनुशासन की स्थापना में बालक को प्राकृतिक परिणाम भुगत लेने दो। यदि कोई बालक बालक आग से खेलता है तो उसे खेलने दो एक बार जब उसका हाथ जल जायेगा तो वह अनुशासन में रहना सीख जायेगा।"

पेस्टालॉजी → "अनुशासन का आधार प्रेम है जो प्रेम से नियन्त्रित होता है।

टी० पी० नन ⇒

" अनुशासन उसे कहते है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आवेगों को व्यवस्था के आधीन करता है। जिससे असत व्यवस्थता के आधार पर शिष्टाचार तथा निपुणता की स्थपना की जाय "।

डब्ल्यू० एम० रायबर्न →

सच्चा अनुशासन रची कारात्मक एवं रचनात्मक होना चाहिए, नकारात्मक या विनाशकारी नही, इसके द्वारा निर्माण होना चाहिए विनाश नही (तोड़-फोड़)

प्रो० एस० डी० मुलर –

अनुशासन का तात्पर्य बालक बालिकाओं को प्रजातन्त्र के लिए तैयार करना। अनुशासन का उद्देश्य है व्यक्तियों के ज्ञानार्जन तथा शक्तियों, आदतों, रुचियों एवं आदर्शों के विकास में सहयोग देना जिससे वह स्वयं अपने साथियों के एवं सम्पूर्ण समाज के उत्थान के लिए कार्य कर सके।

अनुशासन के साधन
Means of Discipline

प्रश्न उठता है कि विद्यालय में अनुशासन किस प्रकार अनुशासन स्थापित किया जाय ऐसे कौन से साधन अपनाये जाय कि छात्र में उत्तम अनुशासन भावना उत्पन्न हो सके?

प्रधानाध्यापक के कर्तव्य है कि वह विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण को उपयुक्त एवं सामंजस्य पूर्ण बनाये इस प्रकार वातवरण के निर्माण हेतु वह विभिन्न प्रकार के साधनों का प्रयोग कर सकती है। इन साधनों को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

① Positive means सकारात्मक

② Negative means नकारात्मक साधन

① → Positive means सकारात्मक साधन

विद्यालय वातावरण का छात्रों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

अतः प्रधानाध्यापक को शिक्षकों की सहायता से विद्यालय में इस प्रकार का वातावरण निर्मित करना

कि छात्र स्वयं से अनुशासन में रहना सीख लें।

विद्यालय में उचित वातावरण उत्पन्न करने के लिए निम्न बातों को ध्यान रखना होगा।

(1) छात्रों का स्वशासन Self Government
(2) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ
(3) संगठित सामूहिक खेलकूद
(4) नैतिक शिक्षा की व्यवस्था
(5) विद्यालय का वातावरण
(6) विद्यालय में अध्ययन की सुविधाएँ
(7) परम्परा एवं नियम
(8) पुरस्कार
(9) शिक्षक अभिवावक सहयोग
(10) बाह्य प्रभावों पर नियन्त्रण

(Negative means)
(नकारात्मक साधन)

इसके अन्तर्गत दण्ड व्यवस्था को रखा जाता है। विद्यालय में दण्ड देने पर शिक्षाशास्त्रियों का विभिन्न मत है कुछ विद्वानों के अनुसार छात्रों को दण्ड देना परम आवश्यक है।

तथा विद्वानों का मानना है कि दण्ड छात्रों के व्यक्तित्व में ग्रन्थियाँ उत्पन्न कर देता है और इससे उनका व्यक्तित्व कुण्ठित हो जाता है। दूसरे मत के पक्ष में मुख्यतया मनोवैज्ञानिक विचार धारा के मनोवैज्ञानिक हैं। परन्तु एक युग में केवल हमारे देश में ही नहीं विदेश में भी दण्ड को प्रमुख स्थान दिया जाता था।

यदि कोई छात्र पढ़ने में या उत्तर देने में कोई भूल करता है। तो शिक्षक बिना किसी सकोच के छात्र के ऊपर बेंत का प्रयोग करता है। इसके अतिरिक्त विद्यालय में अनुशासन भंग करने वाले छात्रों को कठोर दण्ड दिया जाता था धीरे धीरे दण्ड की प्रधानता विद्यालयों में अत्यधिक हो गयी।

विद्यालय में दण्ड का आतंक सा छाया रहता था, परिणाम स्वरूप छात्र विद्यालय जाने से घबराते थे शिक्षा पर मनोविज्ञान के प्रभाव से विद्यालयों में दण्ड को अत्यधिक महत्व देने का विरोध उत्पन्न हुआ

रूसो के मनोवैज्ञानिक दबाव को दण्ड देने की अपेक्षा स्वतन्त्रता प्रदान करने के पक्ष मे है। उनके अनुसार दण्ड के आधार पर स्थापित अनुशासन अस्थायी होता है।

पी०सी० रेन - का मानना है। कि दण्ड एक बुरी बात है। और उसकी अवहेलना की जानी चाहिए
परन्तु जिस प्रकार सर्जन का चाकू शरीर की सड़न को दूर करने के लिए आवश्यक है।
उसी प्रकार मानव की दुर्बलता को दूर करने के लिए दण्ड आवश्यक है।
प्रजातंत्र के युग मे दण्ड को और भी अधिक हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है। विद्यालयों मे बालक की स्वतन्त्रता मे विश्वास करने की प्रवृत्ति आ गयी है। अतः विद्यालयो मे भय के स्थान पर सहयोग प्रेम द्वारा अनुशासन स्थापित करने पर बल दिया जाता है।

फ्रोबेल/स्पेन्सर - प्राकृतिक अनुशासन